श्रीमैथिली विवाह
पदावली
संग्रहकर्ता
स्व. श्री मैथिलीशरणाचार्य वेदान्ती
संशोधित मूल्य : 30 रुपये

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

# श्रीमैथिली विवाह पदावली

सम्पादक

स्वामी मैथिलीशरणाचार्य 'वेदान्ती'

प्राप्त स्वर्णपदक

।। श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः ।।

।। श्री युगलप्रियाशरणाय नमः ।।

# श्री मैथिली विवाह पदावली


सम्पादकः

रामप्रियाशरण

एम.ए. ''वेदान्ताचार्य''

महन्थ श्रीरसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा, जिला सारण बिहार

महन्थ श्री सद्गुरु निवास गोलाघाट, अयोध्याजी



प्रकाशक/ अधिकारीः

श्री रसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा सारण बिहार

संशोधित एवं परिवर्द्धितः

षष्टम संस्करण, श्रीजानकी नवमी, सन् 2010 ई0

न्यौछावरः 35/– रूपये मात्र

---

मुद्रक मनीराम प्रिंटिग प्रेस, अयोध्या मो 9935220964, 8957464994

प्रथम संस्करण की

# भूमिका

**सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।**
**तिन्ह कहँ सदा उछाह, मंगलायतन राम जस।।**

कलि पावनावतार गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी ने श्रीसीताराम विवाह महोत्सव को परम मंगलमय कहा है। जो भक्त श्रीसीताराम विवाह महोत्सव का गान करते हैं उनके पास सदा मंगल होते रहते हैं। श्रीसीतारामजी की अनन्त लीलाओं में विवाह लीला परम मधुर एवं रसमय है। भारतीय संस्कृति का मूर्त्तरूप श्रीसीताराम विवाह में परिस्फुटित हुआ है। लीलावैचित्री रसवैचित्री से चमत्कृत श्रीसीताराम विवाह रस का अपार सागर है। अनन्त सौन्दर्य माधुर्य निलया श्रीमिथिलेशराजनन्दिनी एवं अपरिगणित कन्दर्पदर्प दलन पटीयान् सौन्दर्य माधुर्य सुधासिन्धु श्रीराघवेन्द्र के असमोर्ध्व माधुर्य का पूर्ण विकास विवाह महोत्सव के अवसर पर दुलहा -दुलहिन के रूप में हुआ है। जिसने दुलहा दुलहिन के रूप में श्रीसीतारामजी का दर्शन नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ है। श्री गोस्वामीजी ने लिखा है-

**"दूलह राम सीय दुलही री"**
ब्याह विभूषन बसन विभूषित,
सखि अवली लखि ठगि सी रही री।
जीवन जनम लाहु लोचन फल,
है इतनोई लह्यो आजु सही री।।

श्रीगोस्वामीजी ने कवितावली में लक्ष्मी, नारायण, गौरी, शंकर, लोमश भुशुण्डि, नारद, हनुमान आदि को साक्षी

देकर कहा है -

बानी बिधि गौरी हर सेसहु गनेस कहीं,
सही भरी लोमस भुसुण्डि बहु बारिखो।
चारि दस भुअन निहारि नर नारि सब,
नारद को परदा न नारद सों पारिखो।
तिन कही जग में जगमगति जोरी एक,
दूजो को कहैया और सुनैया चष चारिखो।
रमा रमा रमन सुजान हनुमान कही,
सीय सी न तीय न पुरुष राम सारिखो।।

विवाह महोत्सव के अपार साहित्य उपलब्ध है। सिद्ध सन्तों के अनेकों पद उपलब्ध है। मिथिला के रसिक भक्तों के अनेकों पद विवाह के सम्बन्ध में गाये जाते हैं, जिनमें श्रीमोदलताजी के पदों का माधुर्य सबसे अधिक है। श्रीअवध के आचार्यों के पद अत्यन्त सरस है, जो कुछ प्रकाशित थे कुछ अप्रकाशित। श्रीसीतारामजी की कृपा से आवश्यक पदों का संग्रह इस पुस्तक में कर दिया गया है। इन पदों का संग्रह श्रीमैथिलीशरण जी ने अत्यन्त परिश्रम से किया है। अतः ये धन्यवाद के पात्र हैं। विवाह रस के रसिक भक्तों को इन पदों द्वारा दुलहा दुलहिन चित-चोर की अनुपम छवि का दर्शन प्राप्त होगा।

अनन्द श्री विभूषित
स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी
महाराज की जयन्ती
कार्तिक शुक्ल सप्तसी, २०४१

स्वामी श्रीसीतारामशरण

चरण कमल में लागल महावर, नख शिख सजल शृंगार।
वाम भाग दुलहिन 'पटरानी' बहिनी सियाजू हमार।।

पद -३४६

मोरा अंगना में उगि गेलै चान तखन परवाहे की।
हम सब थिकौं श्रीसियाजू की बहिनी, दूलह राम सुजान।।
अहोभाग्य मिथिला आँगन की, पहुना जी कुटलनि धान।
जनिकर कृपा कृपा हूँ चाहत, महरियों पर सेहै मेहरबान।।
जनिकर माया सुर मुनि बांधल, तकरे कैलों गाँठि सँ बंधान।
जुग जुग जीवो ई चारों जोरी, छिटकैत रहे मन्द मुसुकान।।

पद -३४७

आजु केर झाँकी अलवेलिया सहेलिया हे।
पूर्ण शीशहिं जनु घेरि मधुप रहे, सकुचि सुसीमटी सकेलिया।।
कच बिच खचित सोह हीरे कण, घन बिच नखत उजेलिया।
कोटि अनंग संग जनु इन्द्र धनु, भ्रूवर विकट अपेलिया।।
दृग मृग मीन खंजनहूँ लाजत, सकजल जलज लजेलिया।
अमल कपोल हलत लट अहि शिशु अमिय रसिक रसकेलिया।।
नाशामणि जनु अमिय सरित बिच, उझकि झुकि करत झमेलिया।
छबि माधुरी शोभा सुषमा बिच, उपमा करत अठखेलिया।।

पद -३४८

पाहुन कत जैता, एहि ठां ब्याह रचैता।
छबि माधुरी बरसैता महल बसि जैता।।

पड़ल आदत पाहुन कोना क छोड़ैता,
बिनु गारी फज्झतें पाहुन कोना खैता।
अवध में सारी सरहज कत पैता,
बहिनी के संग कोना गाँठि जोड़ैता।।
अवध जँ सारी सरहज ल जैता,
अवध कि रहतै ओत मिथिले बनैता।
व्यापक ब्रह्म पाहुन जँ कहैता,
तक बसि जैता कत सँ परैता।।

पद -३४६

जादू भरी तेरी आँखे जिधर गई।
निरखि छटा घनघोर घटा, भावना की उमड़ गई।।
प्रेम की लड़ी अड़ी दृग दोनों, बरसि पड़ी मोती सी बिखर गई।
नैन की कटारी वारी वारी पलकन मारी,
जादू की पिटारी दृग छुई मुई कर गई।।
मुकुलित कली ललित हिय बिकसित, प्रेम पराग सरस रस भर गई।
अब पल पलक टरत नहिं टारे, छिन छोरत जनु जान निकल गई।।

पद - ३५०

कोना भेलै हमर एहन भाग रे पहुना मेरे।।
नहिं छल धर्म बल सदाहिं तिय निरबल,
नहिं छल पद अनुराग रे।।

जेहि छबि लागि मुनि तनहिं तपावत,
शिवजी कैलनि ऐश्वर्यक त्याग रे।

बूझि न पड़ैत छल कोनठां छिपल अन्तस्थल

हमर आहाँक प्रेम केर ताग रे।।

माता पिता के छोड़ी मुनि के बहाना जोड़ी, त्रिगुणातीत शिवधनु तोरी,

माथे पर पहिरि मौरी, भरि देलखिन सियाजी के सुहाग रे।।

दुलहा शिर मौरिया लहरे, सिया शिर केशी छहरे,

शोभा निरखु भरल सिन्दुर माँग रे।।

पद –३५१

हे अवध छयल मनहरन पिया तेरी आँखे अजब मतवारी है।

भौहें कमान दोउ नैन बान पर विष सम कजरा डारी है।।

चम चम चमके माथे पै मौर, चहुँओर छोर छहराय रहे।

झगड़ै आपस में कुटिल केश, अरु निज निज दाव बचाय रहे।।

पर नाशामणि है मस्त आज, रस पीकर अधर अपारी है।

दाड़ीम दसन मृदु मन्द हँसन लखि ललकि जिया मोर भूलि रहे।।

कुण्डल कपोल पै करैं किलोल सुचिहार गले बिच झूलि रहे,

ओ नील बदन पर तिलक बिन्दु चमके जनु घटा सु कारीहै।

पीत रंग कोरदार बसन, चपकन पर चादर डारी है।।

पावों में महावर मेंहदी हाथ की लाली अजब निराली है।

इस हृदय मध्य में बसो पिया 'बिन्धेश्वरि' तन मन वारी है।।

पद –३५२

बोरी बना दिया है आँखे बड़ी बड़ी।

मिथिला शहर की गलियाँ चरचा छिड़ी है घर घर, ऊधम मचा दिया है।।

बेचैन दिवानी सी सोहत शान बैठे सबसे हलचल मचा दिया है।

ब्याही विवस न ब्याही हुलसी फिरैं अटा पै, गौने की भई मौने
सुनि देखिबे को दौड़े गये 'सरससंत' बौरे, बरछी सी तिरछी मारा
जहरी अवध छयल के नैना हैं डाकू शहरी, पीछे से पड़ गये हैं।।

पद - ३५३

तन मन सरबस बारी, रघुवर प्यारे ललन पर।।
शीश कनकमणि मौरी सोहे, सेहरा लहरा लेत छयल की चन्द्रबदन पर
नैना बड़े मद छाये गुलाबी, कजरा नजरा जादू करे मिथिला अबलन पर
कुण्डल के लग में काली जुलुफिया, मानों नगिनियाँ पहरा देत सियाप्यारी के धन पर
विहँसत पान के लाली लसे मुख, कसकत सबके हियरा नासामोती हलन पर
श्यामल अङ्ग केशरिया जामा, मोतियन छबि छहराती छोरन पीत बसन पर
नूपुर युत पद सोहै महावर,'नेहशिला' के ज़ियरा ललकत लाल तलन पर

पद - ३५४

सखि सांवरे सलोना हमर पहुना, बड़ा सुन्दर लुभौना
नील कमल घनश्याम नीलमणि, छबि छटा छहरौना।
अनुपम अङ्ग अङ्ग रुचिराई, रति मदन लजौना।
इन्द्र चन्द्र विधि शिवपद पूजित, सोई रसिक खेलौना।
अमित कोटि ब्रह्माण्ड चलावत, सखि केहन लजौना
धनि मिथिला धनि सिय बड़भागिनी, धनि जनक सुनैना।
यन्त्र मन्त्र किछु मुनि संग सीखल, मन्द मधुर हँसौना

'प्रेमनिधी' रस मुग्ध मगन मन, वर्णन करू कोना।।

चितचोरना पद - ३५५

दुलहाक मुंह अनमोल नीलमणि सन,लटकल कुटिल अलक।
शिर पै मुकुट सोहैं रवि इव चमकत, दमकत पट पट वास।।
अथवा गगन शशिधरक उदय भेल, अमी नव सुषमा विराजे।
कुवलय नयन वयन लागे सुधा सम, भृकुटी छटा सँ मधु चुवै।।
सखी सब मधुकरी निकरबनल छथि, रूप रस पीवि माति भेली।
एहन अनूप रूप कत त्रिभुवन मध्य, अजब अनोखे दोनों ठोर।।
जनकदुलारी के सुहाग बड़ गोट छैन, जुग जुग जीवे अहिवात।
कहैं 'रामलोचन' सुनु ए सुकुमारी सिय, गिरिजा पूजाक फल ए है।।

पद - ३५६

जखन श्यामल बर लली मुख जोहलनि, निज सुधि गेला बिसराय।
लोचन पलक झलक अटकौलनि, मन मुख लखि ललचाय।।
चन्द्रप्रभा छबि छिटकत छकलनि, गर्व गुमान गँमाय।
रूप अमृत पीवि जीय जुरैलनि, वेरि वेरि नयन चलाय।।
गोरी किशोरी वाम अङ्ग वैसलनि आनन्द अवधि बनाय।
श्याम घटा बिजली चमकैलनि प्रेम बन्द बरसाय।।
जन्मक फल हिय सुख सरसैलनि, व्याह मण्डप बिच आय।
कोटि मदन रति मद ढहवौलनि, मन्द मन्द मुसुकाय।।

पद -३५७

निरखु सजनी दुलहा बांका सँवरिया।।
ललित विशाल भाल पर राजत, मंगल मंजु मवरिया।।
अनियारी कजरारी अखियाँ, चितनव करे चितचोरिया।।

पटुका पीत रंग कटि सोहत, जामा रंग केशरिया।।
'मोहन' ऐसे सुभग बनरे को लखि सुख लहत नजरिया।।

पद - ३५८

लामी लामी केशिया तोरी, साँवली सुरतिया हाय रे दुलहा।
दुलहा बोलेला मधुरी बोल।।
माथे मणि मौरिया तोरी जामा जड़ितरिया हाय.,
अलक हलनियाँ अनमोल।।
नयना कजरिया तोरी छेदेला जिगरवा हाय.,
तिरछी तकनियाँ विष घोल।।
एक मन करे तोरा संगे संगे रहितौं हाय.,
एक मन करे डमाडोल।।
'मोहन' मनहरवा तोरी बड़ी बड़ी अखियाँ हाय.,
सनमुख दरश पट खोल।।

पद - ३५६

जनक किशोरी मोरी भेलथिन बहिनियाँ हे मिथिला के नाते,
रामजी पहुनमां भेलथिन मोर।।
सिया सुकुमारि छथिन प्राणहुँ से प्यारी हे मिथिला,
प्राणधन कौशलकिशोर।।
निरख हृदय के हम मड़वा बनायब हे मिथिला,
दुलहा दुलहिनि चितचोर।।
कबहुँ हृदय के हम कोहबर बनायब हे मिथिला,
हास रस में होलय विभोर।।

दुलहा दुलहिनि संग जीवन बितायब हे मिथिला,
'रूपलता' लखि दृग कोर।।

पद -३६०

सुगना जे हमरी अटरिया रे सजनियाँ, मीठे बोल बोले ना।
मोरा अँगना रे पहुनमां अनमोल ऐले ना।।
नैन के कोठरिया में पुतरी पलँगिया, हम बिछाय देवै ना।
डारि पलकन के चिकवा, पिया रिझाय लेवै ना।।
जहिया से देखलौं सखि साँवरी सुरतिया, सुधि भुलाय गेले ना।
नेह नदिया में मनमां, मोरा नहाय गेले ना।।
लोकवा के लाज सब प्रेम अगिनियां में, जराय देलियै ना।
सब जग के जञ्जलवा बिसराय देलियै ना।।
मिटलै 'करील' सब चाह छबि दुलहा, हिया बसायै लेलियै ना।
प्रीति नदिया में ममता-लता भँसाय देलियै ना।।

पद -३६१

करिके कृपा निहोरा मानि दरस दिखलाऊ ए रघुनन्दन।
रहिया जोहत ई अँखियन के आजु जुराऊ ए रघुनन्दन।
श्याम गात मुखचन्द्र की शोभा कौटि अनंग लजाय़ रही।।
घुंघरवाली लट पै मोतिन मौर छटा छहराय रही।
कजरारी अँखियन की पलकें पल पल तीर चलाय रही।।
मृदु मुसुकान अरुण अधरन पर चाँदनियाँ बरसाय रही।
युग युग से छनकल मन के प्यास बुझाइ ए रघुनन्दन।।
हरि भगतन से सुनले बानी जे भी तोहके ध्यावेला।

जइसन भाव बनावे मन में ओही रूप में पावेला।।
वेद कहैं अज निराकार से हमरा समझ न आवेला।
ए पाहुन ! ई अँखियन के बस दूलह रूप ही भावेला।।
ना जाने अइसन जादू कौन चलौल ए रघुनन्दन।
सिया बहिन के नाते अब तऽ ए पाहुन ! अपना लीहऽ।।
हमरी ओर न तनिको देखिहऽ आपन विरद बचा लीहऽ।।
जब जब भागे दुनियाँ में ई मनमां बड़ जंजाली हऽ।।
तब तब ई आँखिन के आपन दुलहा रूप दिखा दीहऽ।
'परताप' ना छोड़लऽ जेकरा के अपनौलउ ए रघुनन्दन।।

पद -३६२

सब भाँति मनोहर पिय सिय का लगता नाजों का पाला है।
कुछ कसर अगर तो बस इतनी दुलहा थोड़ा सा काला है।।
है रंग सलोना ऐसा जैसे सावन की घन छाय रही।
घूंघरवारी अलकों पर मोतिन मौर छटा छहराय रही।
कानो में कुण्डल झलक रहे उर सोहत मोतिन माला है।।
अलकें हैं कुटिल, पलकें हैं कुटिल, है तकान कुटिल, मुस्कान कुटिल।
बिखरी लट की बलखान कुटिल मानो विधि ने
कुटिलाई के साँचे में इनको ढाला है।
कजरारी अँखियन की पलकों से पल पल तीर चलाय रहे।।
मदहोशी सी छा जाती है, जब मन्द मन्द मुस्काय रहे।
आली ! दुलहे के वेश में लगता आफत का परकाला है।।
गोरें होते जब मात-पिता, होते गोरे भी छोरे हैं।
माता कौशल्या गोरी हैं और कोशलपति भी गोरे हैं।

यह दुलहा जब काला है, फिर कैसे दशरथ लाला हैं।।
श्रुति शास्त्र 'प्रताप' बताते हैं, ये वरद 'श्रेष्ठ' कहलाते हैं।।
कृपा से इनकी लोग सहज ही, परम शान्ति पा जाते हैं।
हैं भले कालहू को काला, पर लगता भोला भाला हैं।।

पद - ३६३

सेहरे की निराली शान निहारु सखी पाहुनमां।
धरती पे उतर आया चान, निहारु सखी पाहुनमां।।
माथे मंजुल मौर खौर केशर की भाल सुहाये,
कमल नयन कारे कजरारे चितवन चित्त चुराये,
मकराकृत कुण्डल कान।। नि.।।
श्यामगात झलके पीताम्बर जनु घन दामिनी राजे,
रतन जटित कंगन कर सोहे उर मणिमाल विराजे,
मारैं कोटि मदन मद मान।। नि.।।
बिना बुलाये संग गुरु के जनकपुरी में आये,
ना जाने कब नैनन के मग हिय में आय समाये,
बन गये सर्वस्व जो थे अंजान नि.।।
जो योगी के ध्यान कहाते ज्ञानीजन के ज्ञान,
नेति नेति कहि वेद सदा 'परताप' करें गुण गान,
वे ही मिथिला के दुलरुवा मेहमान ।। नि.।।

पद -३६४

आज महलों में जरा चाँद उगाने तो दो।
सियाजू चाँदनी से चाँद मिलाने तो दो।।

ए वो चाँद नहीं जो आवारा फिरता है फलक पर।
ठहर जा ए सखी सेहरे को हटाने तो दो।।
बड़ा गरूर था कि सारे जहाँ में हम हैं।
सिया के नूर पर भरपूर लजाने तो दो।।
जनम का सूखा जिया आज हरा हो जाय।
प्रेम नदिया में उब चुब के नहाने तो दो।।

आशीर्वादात्मक पद-३६५

नव नव राजत छिन छिन अनूप छटा,
सजल जलद वरन रूप मदनहूँ लजावै री ।
बड़े बड़े नैन अनियारे कजरारे कारे,
लाल लाल डोरे तामें अधिक सुहावै री ।।
मरकत धनु कुटिल भौंह नाशा तिल सुमन चारु,
मदन मुकुर से कपोल कुण्डल झलकावै री ।।
तापै छुटी अलक सघन शशि बिच लख मीन मानो,
धरत धसे अहि अनेक परस को न पावै री ।।
जैसोई स्वरूप तैसी सुघरता सुजानताई,
माई री सिया को वर मोको अति भावै री ।
'रसिकअली' यह अनूप जोरी जग अचल राज,
वैभव बिलास नित नयो विधि बढ़ावै री ।।

पद - ३६६

सिय बनी को बना नित रहइ बना।।

सुन्दर सुखद सुजान श्याम तन, प्यारी प्रेम सना ।
रूपी राम काम सत सुन्दर, रूप वितान तना।।
सोइ रूपी चख चखत प्रिया छवि, तृपित न होत मना।
'युगल विहारिनि' अलियाँ असीसत, पाइ सु युगल धना।।

पद - ३६७

चिरंजीवै बनी को सुघरा बनरा।
जामा जरद जरकसी पटुका, मुखमयंक ऊपर सेहरा।।
पान खात मुसुकात छवीले, घायल करत नयन कजरा।
'मधुपअली' निरखत छवि ऊपर, तन मन धन न्योछत सगरा।।

पद -३६८

जुग जुग जीय हो दुलरुवा दुलहा लाड़िली के संग।।
माथे मणि मौर बाढ़ो, मँगिया सिन्दूर बाढ़ो, नथिया बुलाक बाढ़ो।
अनुछन प्रीति परस्पर बाढ़ो जब तक सूरज अरु चन्द।।
जब से मिथिला में अयलऽ, नित नव मंगल मोद बढ़ैलऽ,
मिथिला वासिन सबके हिय में नित नव लहरत प्रेम तरंग।।
दोउ पर दोऊ बलि बलि जावो, निज निज सौभाग्य मनाओ,
दोउ दम्पति के स्नेह अमर हो, छन छन नवल उमंग अभंग।।

पद-३६९

सिया रानी का अचल सुहार रहे, राजाराम के शिरपर ताज रहे।
जब तक पृथिवी अहि शीश रहे, गंगा यमुना की धार रहे।
नभ में शशि सूर्य प्रकाश रहे, तब तक यह बानक बना रहे।।
नित बना रहे नित बनी रहे, नित बना बनी में बनी रहे।

सुहाग रहे शिरताज रहे, नित नित यह बानक बना रहे।।
नित कनक बिहारी बिराज रहे, नित अलियों का ए समाज रहे।
नित झाँकी ऐसी साज रहे, प्रेमीजन का बड़भाग रहे।।

पद -३७०

जीओ जीओ चन्दा चाँदनियाँ रे।।
जीओ जीओ बरस करोरी, जबलौं चाँद सूरज की अँजोरी,
सुख लूटैं मिथिला भामिनियाँ रे ।।
जीओ जीओ मिथिलेश किशोरी, प्रीतम सुख छबि चन्द चकोरी,
नित नव रस बरसावनियाँ रे।।
जीओ जीओ मेरे नैनों के तारे, सिया प्यारी के प्राण अधारे,
सखियन नैन जुड़ावनियाँ रे।।
जुग जुग जीओ माधुरी जोरी, अचल रहो बड़भाग बढ़ो री,
मनभावन मनभावनियाँ रे।।

पद -३७१

चारों दुलहा की जै, चारों दुलहिन की जै।
धाम मिथिला अयोध्या की जै जै जै।।
चारों चन्दा की जै, चारों चाँदनी की जै।
सब अलिगन चकोरी की जै जै जै। ।
चारों बहिना की जै, चारों पहुना की जै।
सब बराती सराती की जै जै जै।।
चारों जीजा की जै, चारों जी जी की जै।
बाबा तुलसी गोसाई की जै जै जै।।

# श्रीराम कलेवा

छन्दः-

जै गणपति गिरिजा गिरिजापति जयति सरस्वति माता।
जय गुरुदेव केशरीनन्दन चरण कमल सुख दाता।।
उनइस सै दुइके सम्वत् में जेठ दशहरा काहीं।
ग्रन्थ कियो आरम्भ अनूपम बैठि अयोध्या माहीं।।
अहै प्रीति की रीति अटपटी मैं केहि भाँति बताऊँ।
ताते सानुज रामकुँवर को रहस कलेवा गाऊँ।।
जेहि विधि जनक सदन रघुनन्दन कीन्हें रुचिर कलेऊ।
सुख दीन्हें सारी सरहज को सो सब कहिहौं भेऊ।।
ब्याह उछाह सिया रघुवर को मैं बरणों केहिं भाँती।
छन महँ बीति गई सब रजनी रागे रङ्ग बराती।।
भोर भये अपने कुमार को जनक वेगि बुलवाये।
सुनि के पितु निदेश लक्ष्मीनिधि सखन सहित तहँ आये।।
सादर किये प्रणाम चरण छुइ लखि बोले मिथिलेशू।
गवनहु तात तुरत जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू।।
विनय सुनाय राय दशरथ सों पाय रजाय सचेतू।
आनहूँ चारिहुँ राजकुमारन करन कलेऊ हेतू।।
यह सुनि शीश नाय लक्ष्मीनिधि भरि उर मोद उमङ्गा।
सखन समेत मन्द हँसि गवने चढ़ि चढ़ि चपल तुरङ्गा।।
कलनि देखावत हय थिरकावत करत अनेक तमासे।
मृदु मुसुकात बतात परस्पर पहुँच गये जनवासे।।

जहाँ भानुकुल भानु अवधपति दशरथ राज विराजे।
बैठे सभा सकल रघुवंशी तेजस्वी सुख साजे।।
चोपित चोपदार जहँ बोलत बन्दी विरद उचारे।
सुख दायक गायक गुण गावत नौबत बजत दुआरे।
सखन सहित तहँ उतरि तुरङ्ग ते मिथिलापति के वारे।
चारिहुँ सुत युत अवधराज को सादर जाय जुहारे।।
अति सुखनिधि लक्ष्मीनिधि को लखि सखन सहित सतकारे।
रघुकुल दीप महीप हाथ गहि निज समीप बैठारे।।
तेहि छिन सानुज निरखि राम छवि सखन सहित सुख साने।
लक्ष्मीनिधि मुख दरश पायके रामहु नैन जुड़ाने।।
तब श्रीनिधि करजोरि भूप सों कोमल बैन उचारे।
करन कलेऊ हेतु पठाओ चारिहु राजदुलारे ।।
सुनि मृदु वचन प्रेम रस साने दशरथ मृदु मुसुकाने।
चारिहुँ कुँवर बुलाय बेगहीं विदा किए सुख माने।।
जनकनगर की जान तैयारी सेवक सब सुख पागे।
निज निज प्रभुहिं सँवारन लागे लै भूषण बर बागे।।
रघुनन्दन शिर पाग जरकसी लसी त्रिभङ्गी बाँधी।
तिमि नौरंगी झुकी कलङ्गी रूचि रुचि पै जनु साधी।।
कनक कलित अति ललित मणिन की मंजुल मौर विराजी।
सिंधुरमणि के सजे सेहरा जोहि होत मन राजी।।
ताके कोर कोर चहुँओरनि लगी रतन की पाँती।
जगमग ज्योति होत चहुँदिशि ते लखि अँखियाँ न झपाती।।

कुण्डल लोलैं हलैं कपोलैं लगी अमोलैं मोती ।
जेवदार जगमगहिं जड़ाऊ युगल जंजीरन जोती ।।
जालिम जोर जोहरी जुल्फैं युवतिन जीवन हारी ।
छूटी अलकैं दहुँदिशि झलकैं मनहु मयन तरवारी ।।
रतनारी कारी कजरारी अति अनियारी आँखें ।
रसवारी बरबस बसकारी प्यारी आन न राखैं ।।
अति अवरङ्गी रति रस रङ्गी चढ़ी त्रिभङ्गी भौहैं ।
मनहुँ मदन के युग धनु सोहैं जोइ जोहैं सोइ मोहैं ।।
तिलक रसाल विशाल भाल पर किमि बरणों छवि ताको ।
जनु नव घन पर रीझि दामिनी नेम लियो थिरता को ।।
अरुण अधर बिच दामिनि दुतिहर दमके दशननि पाँती ।
सन्मुख मुख करि जेहि दिशि बोलें अजब छटा छहराती ।।
जगमगात अति श्याम गात पर जरब जरनि को जामा ।
ताके कोर कोर चहुँओरनि गुथे रतन मणि ग्रामा ।।
पीत सुफेटा सुछबि सपेटा कमर लपेटा राजे ।
नवल पटूको करन लटूको कन्ध पटूको भ्राजें ।।
छोरन लगीं करोरन मोती कोरन लगी किनारी ।
अतिशय हलकैं लगैं न पलकैं लखि ललकैं सुर नारी ।।
सिंधुरमणि के परे चौलड़े मणिन माल बहु सोहैं ।
कठुला कण्ठ विजायठ बाहन देखतही मन मोहैं ।।
मणिमय कंचन सुखप्रद कङ्कन बङ्कन कर बिच बाँधे ।
जनु सब युवतिन मन जीतन को यंत्र वशीकर साधे ।।

मणिमय डालै विरचित जालै कसी कमर करबाले ।
कञ्चन बालें बंधी विशालें सजी सबुज उर मालें ।।
सुरही पीत जरकसी पनहीं मनहीं मनैं सुहाती ।
नुपूर युत पद दियो महावर देखत देह भुलाती ।।
बदन सकल सुख सदन रामको कोटि मदन मद मारे ।
दरशत उर बरसत रस सबके जनु तनु धरे शृङ्गारे ।।
बीरिन खात बतात सखन सों जब प्रभु जेहि दिशि बोल ।
तन मन भूलि जात सब ताको लेत प्राण मन मोलें ।।

दो.- बरणि सकै को राम को अनुपम दूलह वेष ।
जेहि लखि शिव सनकादि को, रहत न तनहिं सरेख ।।

इमि सजि अनुज सहित रघुनन्दन चारों राजदुलारे।
बड़े उमङ्गन चढ़े तुरङ्गन अङ्गन बसन सँवारे।।
जो रघुवंशी कुँवर लाड़िले प्रभु कहँ प्राण पियारे।
चढ़े तुरङ्ग सङ्ग ते गमने रामरङ्ग मतवारे।।
बोले चोपदार लै नामै निज-निज युक्ति अलापै।
चञ्चल चमर चलै दुहुँदिशि ते छत्र सखा सिर ढापै।।
राम बाम दिशि श्रीलक्ष्मीनिधि सखन सहित तेउ सोहैं।
चञ्चल बागें किये तुरङ्ग की बात करत मन मोहैं।।
जगवन्दन जेहि नाम जाहिरो रघुनन्दन को बाजी।
ताको गुण छवि कहँ लौं वरणौं जोहि होत मन राजी।।
भूषित भूषण अङ्ग अदूषण पूषण हय लखि लाजैं।
चोटिन मनियाँ गुथी सुमुनियाँ पग पैजनियाँ बाजैं।।

जड़ित जवाहिर जीन जरी की जरबीली अति सोहैं।
पूजि पटा की छैल छटा की काम लटा मन मोहैं।।
जेरबन्द मन फन्द सबन की तङ्ग सुरङ्ग सुहावै।
जरकसि पेटी लसी लपेटी झुक झालरि छवि छावै।।
ललित लगाम दाम बहुकेरी अङ्कित नाम विराजै।
सुछवि उमङ्गी झुकी त्रिभङ्गा मणिन कलङ्गा छाजै।।
जित रुख पावै तित पहुँचावै छिन आवै छिन जावै।
जमि जमि थमि थमि थिरक भूमि पर गति नीकी दरशावै।।
खीनी कटि पीनी खुर थालैं बँधी नवीनी नालैं।
लेत उतालैं सिंधु उछालैं करत समुद इक फालैं।।
जब उड़ि टापैं धरत धरापै रवि बाजिन उर काँपै।
जल पै थल पै अनिल अनल पै जात न कबहुँ डरापै।।
धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व गमावै।
रघुनन्दन को बाजि लाड़िलो अनुपम कला देखावै।।
नाम समुद मुद देत नरन को जापर भरत विराजैं।
श्रीरघुनन्दन के दाहिन दिशि चलत चपल गति साजैं।।
रोकत बागै अति रिस रागै करते फुरकन लागै।
डमकि डमाकी लगती बाँकी दै हाँकी सुख पागै।।
कहुँ नभ जावै सुरन छकावै कहुँ महि मोद मचावै।
अवनी ते अरु आसमान लौं जनु सोपान बनावै।।
फाँदत चञ्चल चारु चौकड़ी चपला के चख झाँपै।
भरत कुँवर को तुरंग रंगीलो बरणि जाय कहु कापै।।

चम्पा नाम चाल चटकीली जेहि पर रिपुहन भाये।
सब समाज के आगे निरतत मोर कुरङ्ग लजाये।।
जो कहुँ नेकहु हाथ उठावत कई हाथ उड़ि जातो।
बार बार चुचकारि दुलारत ताहू पै न जुड़ातो।।
जब गहि बागै ठुमकत चालैं गनि गनि धरत सुफालैं।
तकि तेहि चालैं सुरमुनि लाजैं चितवत चकित विहालैं।।
गजन मध्य घुसि परत डरत नहिं जरत परत पगु धारे।
रिपुसूदन को बाजि बाँकुरो कोटिन कला पसारे।।
लक्खी घोड़ा लषनलाल को बाँको विकट चलाको।
उड़ि उड़ि जात वायुमण्डल को परत न पग महि ताको।।
छनक छितै छिन आसमान पर छबि छबिको छबि छावै।
छनमह छन छन नाच गई गति सिगरे जनन छकावैं।।
तरफराय उड़ि जाय परत है लक्ष्मीनिधि हय पाहीं।
उचित बिचारहिं सब रघुवंशी रामहुँ मृदु मुसुकाहीं।।
मेघ घटापै मारि सुटापै बिचरै बिबुध अटापै।
केम जटा पै बाजिन ढापै जनु रविमण्डल नापै।।
तोप तुपक जूटै जहँ छूटै तहाँ जाय सो टूटै।
रण रस घूटै वैरिन कूटै वीरन में यश लूटै।।
हूत करत पुरहुत डरत हिय महा बूत बल जाके।
जबसे रहे जनकपुर बासी जोहि जोर जब ताके।।
चीकन चोटी सुभग सुकोटी मोटी कटि छबि पावै।
रेशम तारन जाल सँवारन वायू ऊपर धावै।।

फुल झरिया सो झरत धरत डग करत अनेक तमासो।
दुरकनि मुरकनि थिरकनि तरकनि बरनि जाय कहु कासो।।
तकि तुरंग की चञ्चलताई लखन की देखि चढ़ाई।
निमिवंशी रघुवंशी सगरे ठगि से रहे बिकाई।।
राम आदि जे कुँवर लाड़िले तेउ लखि भरे उछाहैं।
रीझि रीझि तहँ लषनलाल को बारहिं बार सराहैं।।
इमि मग होत विलास विविध विधि विपुल बाजने बाजे।
सुनत नकीब पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजे।।
कोउ तिय निरखि बदन की सुखमा अति सुखमा सों पागी।
भरी सनेह देह सुधि नाहीं रामरूप अनुरागी।।
कोउ तिय देखि अतूला दूल्हा अति सनेह तनु भूला।
फूला नैन मैन मन झूला लगी प्रीति की हूला।।
कोउ तिय पति संग परी पलँग पै झाँकि झरोखे लागी।
रामरूप रंग गई लाड़िली उठि भागी पति त्यागी।।
कोउ घूँघट पट खोलि सुन्दरी मणि मुदरी लै पानी।।
देखत दूलह रूप रामको आनन्द सिंधु समानी।।
दो.- कोउ सूरति लखि साँवरी,तोरति तृण सुख पागि।
मधुरी मूरति में पगी, निज सूरति सुख त्यागि।।
कोउ रघुनन्दन छबि विलोकि कै बोली सुनु सखि बैना।
राजकुमर सब करन कलेऊ जात जनक के ऐना।।
इनको श्रीनिधि गयो लिवाई आयो चारिहु बेटा।
रंगभीने रघुवंशी छैला दशरथराज दुल्हेटा।।

धनि यह भाग हमारी प्यारी निज भरि नैन निहारे।
नतु दर्शन दुर्लभ दूलह के रविकुल प्राण पियारे।।
भाग सोहाग आज भल पायो श्रीमिथिलेश की बेटी।
सुन्दर श्याम माधुरी मूरति निज निज भुज भरि भेंटी।।
बोली अपर सखी सुनु सजनी भली बात बनि आई।
हमहुँ चलैं सब जनक महलको हँसिये इन्हें हँसाई।।
इमि मृदु बातैं करत परस्पर भई प्रेम बस बामा।
सुनत जात मुसुकात अनुज युत कृपासिंधु श्रीरामा।।
तुरंग नचावत मग छवि छावत बाजत विपुल नगारे।
चोपदार जाँगरे अलापत जनक नगर पगु धारे।।
द्वार समीप देखि अति सुन्दर मणिमय चौक सँवारे।
राज कुँवर रघुवंशिन के तहँ ठाढ भये मतवारे।।
उतर जाय लहि सिया मातु की नगर सुआसिन नारी।
कञ्चन कलश सजे सिर ऊपर पल्लव दीप संवारी।।
गावत मंगल गीत मनोहर कर ले कञ्चन थारी।
परिछन चलीं हेतु रघुवर को बहु आरती सँवारी।।
जाय समीप निहारि राम छबि दृग आनन्द जल बाढ़ी।
छकित रही बर बदन बिलोकत चकित जहाँ तहँ ठाढ़ी।।
रामरूप रँगि गई रँगीली लखि दूलह सुख सारा।
तन मन रह्यो सरेख न काहू को कर मंगल चारा।।
प्रेम पयोधि मगन सब प्यारी धरि पुनि धीरज भारी।
परिछन अली भली विधि कीन्हों रोकि विलोचन बारी।।

लक्ष्मीनिधि तब उतरि तुरँग ते चारिउ कुँवर उतारे।
पाणि पकरि रघुनन्दनजी को भीतर महल सिधारे।।
द्वीप द्वीप के जहँ महीप सब जनक समीप बिराजे।
बैठे सभा सकल निमिवंशी सुर अंशी इमि छाजे।।
चोपदार ज़ाँगरे अलापै बहु विधि नौबत बाजें।
फहरे विपुल निशान जरीके नव गयन्द गजराजें।।
रघुनन्दन तहँ अनुज लषण युत सादर जाय जोहारे।
देखत उठे सकल निमिवंशी जनक निकट बैठारे।।
गर गजरा कजरा दृग में सेहरा युत मौर विराजी।
दूलह वेष विलोकि रामको भई सभा सब राजी।।
तहँ करि कछु दरबार जनक को दशरथ राजदुलारे।
लेके राय रजाय नाय सिर सासु समीप सिधारे।।
जहँ पिकबैनी सब सुख ऐनी सासु सुनैना रानी।
इन्द्राणी की कौन चलावै लखि रति रूप लुभानी।।
चन्द्रमुखी चहुँओर बिराजै कोउ कर चमर डुलावैं।
कोउ सखि देखि राम की शोभा आरति मंगल गावैं।
बिछे गलीचे गद्दी तेहिके ऊपर आसन भ्राजै।
जनकराज की रानि सुनैना कोटि चन्द्र छबि छाजै।।
तेहि छिन तहाँ गये रघुनन्दन मन फन्दन बर बेषा।
देखत उठीं सकल रनिवासें रह्यो न तनहिं सरेषा।।
करि आरती वारि मणि भूषण सादर पाँय पखारे।
चारि रङ्ग के चार सिंहासन चारिहु वर बैठारे।।

लखि छबि ऐना सासु सुनैना एक छन पलक तजै ना।
भूली चैना बोलि सकै ना कहत बनै ना बैना।।
तकि छकि रहीं तनक नहिं डोलैं मगन महा मुद माहीं।
रामरूप रँगि गई रँगीली आँसु प्रेम दृग जाहीं।।
इमि तहँ दशा विलोकि सासु को राम गुनत मन माँहीं।
काह भयो यह आजु रानिको पूछत में सकुचाहीं।।
चतुर सखी चित चरचि रामसों बोली मधुरी बानी।
यह तुम्हरे गुण हैं सब लालन और न कछु उर आनी।।
सुनत बैन यह तुरत धीर धरि जगीं सुनैना रानी।
बार बार बहु लीन बलैया चूमि कपोलन पानी।।
मधुरी मूरति साँवलि सूरति को तृण तोरति रानी।
रीझि रीझि तहँ रामरूप पै बिनहीं मोल बिकानी।।
पुनि करजोरि राम सों रानी बोली अति मृदु मोई।
उठहु लाल अब करहु कलेऊ जो जो रूचि हिय होई।।
यह सुनि सखन समेत उठे तहँ चारिहुँ राजदुलारे।
भरी भाग्य अनुराग सुनैना निज कर पाँय पखारे।।
रचना अधिक पदक के पीढ़न बैठारे सब भाई।
कञ्चन थारी मृदल सोहारी परसी विविध मिठाई।।
रुचि अनुरूप भूप सुत जेंवत पवन डुलावैं सासू।
बूझि बूझि रुचि व्यञ्जन परसे वरणि न जाय हुलासू।।
स्वाद सराहि पाय पुनि अँचये सखियन पान खवाये।
बैठे पहिरि पोशाक सखन युत विविध सुगन्ध लगाये।।

दो.- राजऐन सब चैन युत, राजैं राजकुमार ।
जिनको हास विलास लखि, लाजहिं लाखन मार।।
तेहि अवसर सुधि पाय सखी युत लक्ष्मीनिधि की नारी।।
नाम सिद्धि परसिद्धि जासु गुण रूप सील उजियारी।।
भाग सुहाग भरी सुठि सुन्दरि नव जोबन मतवारी।
रसिकन रीति प्रीति परवीनी रतिहिं लजावन हारी।।
अति गुणवान निधान रूपकी सब विधि सुभग सयानी।
लक्ष्मीनिधि की प्राण पियारी निमिकुल की महरानी।।
अलबेली सरहज रघुबर की बड़ी सनेह शृङ्गारी ।
प्रीतम प्रीति निवाहनहारी राम रूप रिझवारी।।
चञ्चल चखन चहूँ दिसि चितवति देखन को अतुराई।
भरी उमङ्ग सङ्ग सखियन लै तुरत राम ढिग आई।।
बदन चन्द अरविन्द लिए कर विहँसत मन्दिर सोहैं।
रामकुँवर को पकर लाड़िली बोली तकि तिरछोहैं।।
ऐ चितचोर किशोर भूप के बड़े चोर तुम प्यारे।
सुरति हमारि भुलाय साँवरे सासु समीप सिधारे।।
उलटी बात कहौ जनि प्यारी आपन दोष दुराई।
तुमहीं रहिउ छिपाय छवीली सुनत हमार अवाई।।
हम आये तुम महलन भीतर तुमहिं न पर्‌यो जनाई।
भलो सदन तुमरो है प्यारी जहँ सब जाहिं समाई।।
सुनत रामके वचन लाड़िली बोली मृदु मुसुकाई।
तुमरे घर की रीति लालजू इहाँ न चलै चलाई।।

सासु सुनैना के समीप महँ देत जबाब बनै ना।
पाणि पकरि रघुनन्दनजी को गई लिवाय निज ऐना।।
चारि सिंहासन दे तहँ आसन भरी हुलासन प्यारी।
बारहिं बार निहार बदन छवि बहु आरती उतारी।।
मेलि सुकण्ठ मालती माला बसननि अतर लगायो।
अञ्चल सों मुख पोछि राम को निजकर पान खवायो।।
जहँ चन्द्रिका समान चाँदनी चहुँकित सुछबि बिशालैं।
चमकै चित्रा हेम सदन के दमकैं मणिन देवालैं।।
जहँ रति रम्भा सरिस सुन्दरी बैठी किये शृंङ्गारे।
कोउ कुसुमन को कर्णफूल रचि कोउ कलँगी कोउ हारें।।
ललित लवङ्ग कपूर सुगन्धित कोउ सखि पान खवावें।
कोउ कर पीकदान लिये ठाढ़ी कोउ सखि चमर डुलावें।।
कोउ शीतल जल भरे सुराही कोउ दर्पन दरसावें।
कोउ निज साज सजे सब प्यारी रघुवर सन्मुख आवें।।
कोउ जलतार सितार तमूरा कोउ करताल बजावें।
कोउ सितार ले तार तारगत गूढ़ गतिन दरसावें।।
कोउ उपङ्ग मुरचंग मिलावैं दै मृदंग मुख थापैं।
कोउ लै बीण नवीन सुरन ते मनहुँ बसीकर जापैं।।
कोउ मृगनैनी कोकिल बैनी पञ्चम गीत अलापै।
परत कान में मधुर तान जेहि विरहिन के जिय काँपै।।
लय की तान मान दै कोई तान वितान बिछावै।
सुनतै श्रवै द्रवै तरु पाहन मुनिहुँ के मदन जगावै।।

इमि अभिराम धाम शोभा लखि राजकुँवर अनुरागे।
बातें करत सिद्धि सरहज सों परम प्रेमरस पागे।।
जे निमिराज नेवत सुनि आई कोटिन राजकुमारी।
राम मिलन की बड़ी लालसा कहि न सकें सुकुमारी।
अति निरदूषन भूषित कञ्चन कैसी बनी नवेली।
रूप शील गुणवान रँगीली राजकुँवरि अलबेली।।
जानहिं प्रीति रीति की बातें केलिन कुशल नवेली।
जिन जोहत मुनिजन मनमोहत मनहुँ मदन की चेली।।
जिन यह सुन्यो कि सिद्धि सदन में आये चारिहुँ भाई।
तुरतहिं पहुँची सबहीं प्यारी जानि समय सुखदाई।।
देखन राजकुँवरि सब आई राम दरस की प्यासी।
अति सनमान कियो सबहीं को सिद्धि सदन सुखरासी।।
राम सुछवि देखन ते लागी दृग आनन्द जल बाढ़े।
झपझप परे रूप सागर में कढ़हि नहीं अब काढ़े।।
मणिक मौर वर मोतिन कलँगी अलवेली अस सोहै।
राजतियन को कौन चलावे मुनियन को मन मोहै।।
पीत पोशाक करन कल कङ्कन बङ्कन चितवनि जोहैं।
योगी यती सती तपधारी सबहीं को जिय मोहैं।।
अनियारे कजरारे कजरा बाँके नैन रिझोहैं।
रहत न ताके निकट कजाके मार करत तिरछोहैं।।
चिक्कन चिलकदार चुनवारी अलकैं मुख पर छूटीं।
जोहत जहर चढ़त युवतिन को जड़ी न लागत बूटी।।

बीरनि लाली दोउ अधरन पर सूरज प्रभा पसारैं।
मानहुँ निकसी मदन म्यान से सान धरी तरवारैं।।
झीन सुजामा अति अभिरामा श्यामगात छबि छाये।
रीझि दामिनी जनु घन ऊपर अपनी छटनि छपाये।।
मन्द हँसनि जनु फँसनि लाल को भौंह कसनि गरवीली।
सुधि न रहत तन असन बसनको सुनत जबान रसीली।।
दूलह मूरति की बलि सूरति कहलौं करौं बखानी।
फिर न दृगन तर आवत कोई जब ते छबि दरसानी।।
लखि छबि वर को श्यामसुन्दर को भई मौन सुख सरकी।
तरकी तनी कंचुकी दरकी कर की चूरी करकी।।
दो.- मन लोभा शोभा निरखि, भई विवश सुकुमारि।
चकित छकित सब रह गई, तन मन दशा बिसारि।।
जो तिय मानि अनूप रूप निज रही स्वरूप गुमानी।
तेहि लखि राम बदन की सुखमा बिनहीं मोल बिकानी।।
जे निज दृगन मृगन ते सुन्दरि गुणि रही गरब के मारे।
छेदि गई सो राम कटाक्षे घायल आँसुन डारे।।
जे अबला अवलम्ब वेद लै सदा पतिब्रत पालैं।
ते बेधी मनसिज के बाणन ब्याकुल फिरहिं बिहालैं।।
रघुनन्दन अलबेला छैला नैन सैन जेहि मारी।
तेहि सुधि रही न काम धाम की फिरहिं मनो मतवारी।।
अति सुकुमारी राजकुमारी सिद्धि सहित अनुरागी।
तहँ प्यारी गारी रघुवर को देन दिवावन लागी।।

एक सखी कह सुनहु लालजी यह स्वरूप कहँ पायो।
कानन सुन्यो काम अति सुन्दर की तुमको सोइ जायो।।
बोली सिद्धि सुनहु रघुनन्दन तुम हमार ननदोई।
एक बात तुमसों हम पूछैं लाल न राखहु गोई।।
होत ब्याह सम्बन्ध सबन को अपने जातिहिं माही।
निज बहिनी शृंगीऋषि को तुम कैसे दियो विवाही।।
की उनको मुनीश लै भाग्यो कै वोई संग लागी।
एती बात बतावहु लालन तुम रघुवंश अदागी।।
लषन कहैं यह सुनहु लाड़िली जेहि विधि जहँ लिखि दीना।
तहँ संयोग होत है ताको ब्याह तो कर्म अधीना।।
कहँ हम राजकुँवर रघुवंशी कहँ विदेह वैरागी।
भयो हमार व्याह तुमरे घर विधि गति गनै को भागी।।
औरो एक हास उर आवै अचरज है सब काहू।
तुमतो हो सिधि वे लक्ष्मीनिधि नारि नारि कस व्याहू।।
एक सखी कह सुनहु लालजी तुमहिं सकै को जीती।
जाहिर अहै सकल जगमाहीं तुमरे घर की रीती।।
अति उदार करतूति दार सब अवधपुरी की बामा।
खीर खाय पैदा सुत करतीं पतिकर कछु नहिं कामा।।
सखी बचन सुनतै रघुनन्दन बोले मृदु मुसुकाते
आपनि चाल छिपावहु प्यारी कहहु आन की बातें।।
कोउ नहिं जनमें मातु पिता बिनु बँधी वेद की नीती।
तुमरे तो महि ते सब उपजे अस हमरे नहिं रीती।।

बोली चन्द्रकला तेहि अवसर परम चतुर सुकुमारी।
सिद्धिकुँवरि की लहुरी भगिनी लक्ष्मीनिधि की सारी।।
लरिकाई ते रह्यो लालजी तुम तपसिन संग माहीं।
ये छल छन्द फन्द कहँ पाये सत्य कहौ हम पाहीं।।
की मुनि नारिन के संग सीखे की निज भगिनी पासे।
मीठो सीठो स्वाद लालजी बिनु चाखे नहिं भासे।।
बोले भरत भली कह सजनी तुमहु तो अबै कुमारी।
वर्णहु पुरुष संगकी बातैं सो कहँ सीखेहु प्यारी।।
रहे मुनिन संग ज्ञान सिखन को सब सिखे सिखाये।
कामिनि काम कला अब सीखन हम तुमरे ढिग आये।।
सिद्धि कह्यो तब सुनहु भरतजी ऐसे तुम न बखानो।
तुम्हरी तो गिनती साधुन में लोक बात का जानो।।
भरत कह्यो तुम साँचि कहत हौ हम साधू परकाजी।
ऐसी सेवा करो कामिनी जासो हो मन राजी।।
आये ऐन अपूरब योगी अस निज मन गुनि लीजै।
अधर सुधारस को दै भोजन अतिथिहिं पूजन कीजै।।
एक सखी कह सुनहु सबै मिलि इनकी एक बड़ाई।
मख राखन को गये कुँवर ये तहँ हम यह सुधि पाई।।
इन कहँ सुन्दर देखि काम वश त्रिया ताड़का आई।
सो करतूति न भइ लालन सो मारेहु तेहि खिसिआई।।
बोले रिपुहन सुनहु भामिनी नाहक दोष न दीजै।
जो करतूति बनी नहिं इनते सो हमसे भरि लीजै।।

बिन जाने करतूति सबन को तुम्हरे घर भो व्याहू।
सो पछिताव न राखो प्यारी अब करि लेहु समाहू।।
जाके हित तुम रोष बढ़ावत सो मति करहु उपाई।
वैसिनि सेवा में तुम्हरे हम हाजिर चारिहु भाई।।
सुनि वाणी रिपुदमन लाल की बोली कोउ सुकुमारी।
कहँ पाई ऐसी चतुराई कहिये लाल बिचारी।।
की महुँ मिली नारि गुण आगरि की गणिकन संग कीनो।
तीनों भाइन ते तुम्हरे महँ लखियत चिन्ह नवीनो।।
रिपुहन कह भल कह्यो भामिनी भेदिया भेदहिं जानै।
गणिका नारिनहूँ ते सौगुण तुम्हें अधिक हम मानैं।।
हमरो तुम्हरो चिन्ह लाड़िली एकै भाँति लखाई।
ताते सखी हमारि तुम्हारी चाहिए अवशि सगाई।।
सुनि नव उक्ति युक्ति की बातैं बोली सिद्धि कुमारी।
सुनिये रसिक राय रघुनन्दन आनन्द कन्द बिहारी।।
अति अभिराम कामहू मोहत मूरति देखि तुम्हारी।
कैसे बची होयँगी तुमसे अवधपुरी की नारी।।
यों कहि रही चुपाय सुन्दरी सिद्धि कुँवरि सुख ऐना।
ताको हाथ पकरि रघुनन्दन बोले अति मृदु बैना।।
दो.- जस मर्यादा जगत की, बाँधि दियो करतार।
राजा रंक यती सती, करत सोई व्यवहार।।
अनुचित उचित बिचारि लोग सब तहँ तस राखत भाऊ।
तुम तो अपने अस जानति हो सबही केर सुभाऊ।।

यहि सुनि भरत लषन रिपुसूदन हँसे सकल दै तारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी तेउ अति भई सुखारी।।
यहि विधि हँसि हँसाय रघुवर सों दे दिवाय मृदु गारी।
नाना भाँति मनोरथ मनके लगीं करन सुकुमारी।।
कोउ सखि राम समीप जायके कहती कछु लगि काने।
कुँवर कपोल परिसके प्यारी जनम सुफल करि माने।।
कोइ निज कोमल कमल हाथ ते चरण कमल प्रभु चापैं।
बार बार हिय लाय लाड़िली दूर करें तनु तापैं।।
कोइ गलमाल उतारि कुँवर की डारि कण्ठ निज लेहीं।
रघुबर मिलन सरिस सुख पावें बारि अपनपौ देहीं।।
कोउ चन्दन चढ़ाई रघुवर उर पुनि निज तनहिं लगावैं।
स्वेदम सुगन्ध परसि के प्यारी तीनहुँ ताप मिटावैं।।
कोई कर कंजन लै मृदु अंजन खंजन दृग दै देहीं।
बिलग न मानहिं राम रंगीले आपन जानि सनेही।।
कोइ चुनि कली अली अति सुन्दर रचि कलँगी शिर दीनी।
राम कुँवर कर छुवत छबीली छकित रही रस भीनी।।
कोउ सखि पान खवाय रामको पुनि निज मुख लिये मेली।
प्रीत प्रसाद जानिके सुन्दरि मगन भई अलबेली।।
निज निज रुचि अनुरूप रामसों कियो भावना प्यारी।
चित चढ़ गई साँवली मूरति भई प्रेम मतवारी।।
रसिक शिरोमणि श्री रघुनन्दन नवल नेह अभिलाषी।
जस जाके जिय रही लालसा तस तेहिके रुचि राखी।।

अवधपुरी दिलदार यार सों लगी अलिन बिच प्यारी।
परबस परी प्रेम पिंजरा में उड़ि न सकें सुकुमारी।।
रघुनन्दन तब कह्यो सिद्धि सों जो तुम देहु निदेशू।
तो अब हम गवनैं जनवासे जहँ श्रीअवध नरेशू।।
सुनि यह बाणी रामकुँवर की काँपि उठीं उर आली।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोलीं बिरह बिहाली।।
नेह बढ़ाय छकाय रूपरस आपु अवध अब जैहैं।
हम विरहिन के प्रान लाड़िले कहो कौन विधि रहिहैं।।
नृत किशोर चित-चोर छबीले तब कस प्रीति लगाई।
हम अबलन अब मारि साँवरो चाहत अवध सिधाई ।।
की तुम लाल यहै बदि राखो जब जैहें ससुरारी।
करिहैं कतल जनकपुर नारिन मारि प्रीति तरवारी।।
हम अबला अबध्य सब भाँतिन सो तुम कान न मानी।
मारेहु नैन बाण विष बोरे भौंह कमानहिं तानी।।
लोक लाज कुल कान बड़ाई यह छन में सब टूटे।
सुनिये रसिकराय रघुनन्दन लगी प्रीति नहिं छूटे।।
नीच ऊँच कौनिउँ जातिन सों जो सनेह लगि जाई।
मिटै न तरस दरस बिन देखे कोटिन करो उपाई।।
यद्यपि मीतकी मूरति निशदिन हिय में बसति विशेषे ।
तरसत रहत दोउ दृग पापी मानत नहिं बिनु देखे।।
बोलनि चलनि हँसनि प्रीतम की हिय ते होत न न्यारी।
तऊ तासु मिलबे को लालन रहति लालसा भारी।।

यों जग में बहु पुरुष देखियत सुन्दर सुघर सुजाती।
बिन देखे निज प्यारे जी को होत न शीतल छाती।।
छन छन बिरह दहै रघुनन्दन नैन लगनि जेहि लागी।
ज्यों भूने की लिए काँकरी जब छिरकत तब आगी।।
निशि दिन ताही में सुख मानत गनत न नीति अनीती।
प्रीति की रीति तेई यह जानै जिनके हाथ बिनीती।।
भरि भरि आवैं नैन वियोगी सूखत जात शरीरा।
प्रीतिमान पहिचानहिं प्यारे प्रीतिमान की पीरा।।
बरु सबते निराश है रहिये सकल जगत सुख भोगू।
परम पुनीत विनीत प्रीत की दैव न देइ वियोगू।।
जो करतार सुनै मन विनती देह इहैं करि छोहू।
अति दिलदार यार प्यारे को कबहुं न होइ बिछोहु।
परबस परे जाय बरु सरबस सब तजि होय विदेही।
सपनेहुँ में बिछुरे न विधाता आपन यार सनेही।।
भोगै नरक निकाय जनम भरि रहै स्वच्छ अरु पापी।।
पै कबहूँ बिछुरे न विधाता आपन यार मिलापी।।
करम धरम बरु त्यागि जगत में फिरै प्रेम मतवारो।
पै कबहूँ बिछुरे न विधाता आपन प्राण पियारो।।
बरु जल भीतर बसे जनम भरि तप करि तनुहिं झुरावै।
पर सपनेहुँ अपने प्रीतम को विधि न वियोग करावै।।
बरु मुख खाक लगाय चाय भरि खाय धरन के टूका।
पै करते निज पिय प्यारे सों कबहुं परै जनि चूका।।
जाति पाँति बरु गोइ खोइ कूल सब तजि होइ भिखारी।
कबहुँ न होइ प्रीति की मूरति इन नयनन ते न्यारी।।

दो.- जेते सुख सब जगत में, सुनिये राजकुमार।
ते सब दुख दोइ जात हैं, बिछुरत आपन यार।।
यद्यपि हम अबला रघुनन्दन नीच जाति सब भाँती।
पै लगि जाहि प्रीति उर जासो तेहिके हाथ बिकाती।।
अति निर्दय स्वारथ रत सब दिन चलियत चाल अनीती।
पै हिय कपट न राखहिं तासों बाँधहिं जासों प्रीती।।
हम तिय नीच मीच की मूरति सदा असाँचहिं भाखैं।
पै लगि प्रीति करैं हम जासों तेहि तन मन दै राखैं।।
पति पितु पुत्र बन्धु परिजन ते रहे सबन ते न्यारी।
पै कछु बीच न राखहिं तासों बाँधहिं जासों यारी।।
हमसे नीच न कोउ जग रघुबर तुमसे ऊँच न कोई।
पै हिय प्रीति जो तौलि लीजिये गरू हमारो होई।।
सुनि इमि आरत बैन तियन के तरुन करुन रस साने।
कोमल चित कृपालु रघुनन्दन प्रीति रीति भल जाने।।
बोले बचन भक्त भय भंजन सुनहु तियहु सब कोई ।
अब मैं कहौं स्वभाव आपनो तुम्हें न राखहुँ गोई।।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक इनते और न भारी।
तिनहूँ ते तुम अधिक पियारी सुनु सिधि राजकुमारी।।
जो कोउ प्रीति करै मेरे पर होत जो जान अजानौं।
प्राण समान सदा तेहि राखौं औगुण एक न मानौं।।
मेरी है यह बान लाड़िली प्रीतिवंत जन जानै।
नतु खोजत लागे मोहि प्राणी करि जप तप व्रत ध्यानै।।

जिन जिन प्रेमिन जगत में सुनियत बड़ी बड़ाई।
तिनतिन में बिचारि जो देखो सब में एक खुटाई।।
हिम तन दहै न कहै कबौं कछु पुनि तेहि लखि सुख मानै।
ऐसो दरद कमल के दिलको कहौ भानु का जानै।।
तरसत रहत दरस बिनु पाये नित ताकत तेहि पाहीं।
अस चकोर की प्रीति चन्द के नेकु चुभी चित नाहीं।।
घुमरी घटा देखि प्रीतम की नाचत दादुर मोरा।
ताकी ओर तनिक नहिं ताके ऐसो मेघ कठोरा।।
पिउ पिउ करिके जौन पपीहा प्राण त्याग करि दीन्हा।
पिव के जीव दया नहिं आई बरु हत्या शिर लीन्हा।।
सरबस त्याग परी तेहिके वश छाड़ति नहिं दिन राती।
ऐसी मीनकी देखि मिताई जलकी फटी न छाती।।
जात पतंग समीप दीप के मोहि ज्योति छन माहीं।
तेहि तन दाहन में कृशानु के भई दया कछु नाहीं।।
ऐसे बहुत प्रीतिवानन की देखों चाल अधीरा।
एक तो प्राण देत वाके पर एक करत नहिं पीरा।।
अस नहिं प्रीति हमारी प्यारी सुनहु सिद्धि सुख धामा।
अपने प्रीतिमान प्राणी को पल भरि तजौं न ठामा।।
छोट जानि मेरे प्रीतम को जो कोउ गर्व देखावै।
अतिशय बड़ा बनाऊँ ताको ब्रह्मा माथ नवावै।।
सिगरे लोकन माँह लाड़िली सबसे तेहि पुजवाउँ।

ब्रह्मादिक को कौन चलावैं मैं तेहि शीश नवाऊँ।।
अपने औ वाके शरीर में नेकहु भेद न राखौं।
कबहूँ छोह न छाड़ौ ताको चूक करै जो लाखौं।।
तीन लोक को राजकाज सब संपति सुत वैदेही।
ये सब प्यार न लागहिं मोको जस मोहि प्यार सनेही।।
नाना रूप धरौं तिनके हित वन वन बिचरत बागौं।
केती विपति सहौं शिर ऊपर पै निज यार न त्यागौं।।
गणिका गीध गयंद अजामिल शबरी और कपिराऊ।
जामवन्त हनुमन्त विभीषण जानहिं मोर स्वभाऊ।।
जो निज मन समेटि सर्वस ते बाँधहिं मम पद प्रीती।
ताके साथ दास सम डोलौं अस हमार है रीती।।
मोसे प्रीति लगाय करे जो और देवन की आसा।
कोटिन विनय करे जो प्राणी मैं न जाऊँ तेहि पासा।।
प्रेम परायन अति चितचायन मित्र भाव हिय लेखे।
ऐसे प्रीतिवान प्राणी को कल न परहिं बिनु देखे।
मनमें स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दरसावैं।
ऐसे मूढ़ मीत की सूरत सपनेहुँ मोहि न भावै।।
महाप्रलय जब होत जगत को बचत न कोउ नरनारी।
नाश नहीं मेरे प्रीतम को सुनहु सिद्धि सुकुमारी।।
जाको मैं राखन मन चाहौं ताहि को मारन हारा।
जाको चहौं उथापन प्यारी तेहि को थापन वारा।
तनिकहुँ जासु चहौं मनते मैं मंगल मोद भलाई।
ताकी तैंतिस कोटि देवता करहिं सदा सेवकाई।।

छन महँ करौं विरंचि रंक सम रंक विरंचि बनाऊँ।
शिव सनकादिक आदि देवता सब कहँ मैं हि नचाऊँ।।
कर्म धर्म वीरता धीरता योग सिद्ध चतुराई।
ज्ञान ध्यान विज्ञान सुजनता राजनीति निपुणाई।।
इनते जीति सकै नहिं मोही कोटिन करे उपाई।
हारि जाउँ प्रेमी प्राणी ते तहाँ न मोर बसाई।।
ते तुम सबै प्रेम की मूरति सूरति की बलिहारी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी मोहि प्राणहुँ ते प्यारी।।
तुम्हरे हिय अभिलाष आजु जो सो सब भाँति पुजैहीं।
लोक की लाज बचाय लाड़िली तुमसे विलग न होइहौं।।
हम सब भाँति तुम्हार साँवरी तुम सब भाँति हमारी।
सत्य सत्य ये सत्य वचन मम मानहु राजकुमारी।।
दो.- रघुनन्दन के बचन सुनि, खुलिगे कपट किवार।
बढ़यो प्रेम सब तियन के, तनकहुँ नहीं सम्हार।।
पुनि धरि धीरज अली भली विधि जोरि पंकरुह पानी।
सिद्धि आदि सब राजकुमारी बोली अति मृदु बानी।।
धन्य भाग हमरो रघुनन्दन हमते बड़ कोउ नाहीं।
बूड़त रही जगत सागर में राखि लीन्ह गहि बाहीं।।
हम नारी सब भाँति अनारी किये प्रीति मुद मोई।
राजकुमार रावरे के सम कीन कृपा नहिं कोई।।
प्रति उपकार होत नहिं हमते जस तुम कीन्हेहु प्यारे।
चन्द्र समान होय नहिं कबहूँ जुरहिं हजारन तारे।।

जेहि जेहि योनि करम वश हमको जनम विधाता देहीं।
तहँ तहँ रसिकराय रघुनन्दन तुमहीं मिलहु सनेही।।
बरु विधि कोटिन करै जातना या तन छन छन छूटै।
हमरी तुम्हरी लगन लाड़िले कौनो जन्म न टूटै।।
सुनि बानी करुणा रस सानी रघुवर अन्तर जामी।
सनमान्यो सब राजकुमारिन कहि कहि कोमल बानी।।
मबसों विदा माँगि रघुनन्दन अनुज सहित पगु धारे।
निकसे मानहु सिद्धि महल ते चारि चन्द्र छबि वारे।।
रामहिं पान खवावत साथहिं चली सिद्धि सुख ऐना।
आये राजमहल में सिगरे जहँ श्रीमातु सुनैना।।
चरण प्रणाम कीन रघुनन्दन जोरि सरोरुह पानी।
बिदा हेतु पुनि बचन सुनाये कहि अति कोमल बानी।।
सुनिकै बैना सासु सुनैना भरे प्रेम जल नैना।
रहो कि जाहु न कछु कहि आवे भूलि गई सब चैना।।
पुनि धरि धीर अनेक सुभूषण जे बड़ मोल के जानी।
अनुज सखन युत रामकुँवर को दीन सुनैना रानी।।
पाय पोशाक नाय सिर चरणहिं लहि अशीश मुद ग्रामा।
तब करजोरि सिद्धि भइ ठाढ़ी सुनो राम सुख धामा।।
हम रउरे चरणन की दासी प्रेम पिआसिन नारी।
हम पर छोह न छाड़ब प्यारे आपन विरद विचारी।।
दृग जल भरि बोले रघुनन्दन हम तुम्हरे बन्दि प्यारी।
अस कहि बोध दियो बहु भाँतिन सब सिधि महल सिधारी।।
रघुनन्दन तब अनुज सखन युत जनक सभा पगु धारे।
सादर कियो जुहार चरण छुइ पाय रजाय सिधारे।।

लक्ष्मीनिधि युत राजकुँवर सब आदि पौरि जब आये।
सेवक सकल तैयारी कीन्हें बाहन सबै बुलाये।।
कोउ तुरंग पर कोउ मतंग पर आप रुचिर सुखपाला।
कोउ सुन्दर स्यंदन चढ़ि राजे बाजे विपुल विशाला।।
फहरे सुभग निशान गगन पर विपुल नकीब पुकारे।
चहुँदिशि ते जाँगरे अलापें बन्दी विरद उचारे।।
कोउ सिर किये छत्रकी छाया कोउ कर व्यजन पसारे।
कोउ रुचि पान खवावैं रामहिं चमर दोऊ दिसि ढारे।।
इमि रचना युत रघुनन्दनजू चढ़े चले सुखपाला।
ललकि झरोखन झाँकन लागीं जनक नगर की बाला।।
कोउ कह दामिनि बरण बनी जस श्रीमिथिलेश किशोरी।
तैसे श्याम सुभाय सलोने रामकुँवर की जोरी।।
कोउ कह कौन जनम धौं पूजहिं यह लालसा हमारी।
कुछ बातें करि रामकुँवर सों मिलतीं भुजा पसारी।।
कोउ कह धन्य राजकुल नारी पूर्व पुण्य भल कीन्हा।
हँसि हँसाय श्रीरामकुँवर सों जन्म सुफल करि लीन्हा।।
आज जन्म धनि जग महँ पायो श्रीनिमिराज कुमारी।
सुन्दर पाय साँवली मूरति उर ते करी न न्यारी।।
कोउ कह कहाँ कुँवर रघुवंशी कहँ हम नारि गँवारी।
केहि विधि मिलना होय विधाता बीत्यो जन्म बृथा री।।
कोउ कह होत भाग भरि सजनी सोच करौ कत प्यारी।
इतनों रह्यो संयोग हमारो नैनन लीन निहारी।।
इमि आरत सुनि बचन तियन कै अति करुणा रस भीने।
तिनको दिशि कृपालु रघुनन्दन चितै प्रबोधहिं दीने।।

इमि मग होत बिलास बहुत रघुनन्दन तब जनवासा।
उतरे अनुज सखन युत रघुवर तुरत चले पितु पासा।।
अवधराज को देखि दूर ते सानुज कीन्ह प्रणामा।
भूपति धाय जाय उर लीने कहि न जाय मुद ग्रामा।।
ढिग बैठारि दुलारि सुतन को पूछत अवध भुवाला।
केहि विधि राम कलेऊ कीन्हों सब कहि जाहु हवाला।।
राय रजाय पाय रघुनन्दन अति अनन्द उर छाये।
सब कहि गये महल की बातें रघुवर सहज सुभाये।।
सुनि बिहँसे महराज सभा युत बरनि न जात हुलासू।
पुनि नृप दिये रजाय सुतन कहँ गे सब निज निज वासू।।
इमि आनन्द जनकपुर वासी नित प्रति पावत लोगू।
कोटिन इन्द्र नजर नहिं आवत निरखत वह सुख भोगू।।
रामकलेवा रहस चरित ये हम लघु मति किमि गावैं।
शेष गणेश महेश शारदा तेऊ पार न पावैं।।
जो कोउ प्रीति रीति उर चाहै सो प्रथमहिं यह बाँचै।
पूरण पावै प्रेम राम को पुनि जग नाँच न नाँचै।।
राम कलेवा रहस ग्रन्थ यह रसिक जनन अधिकारा।
जाके श्रवण परत सब बातैं हिय ना उठत विकारा।।
ज्येष्ठ दशहरा ते आरम्भ करि क्वार दशहरा काहीं।
राम कलेवा रहस ग्रन्थ यह पूरण भो मुद माहीं।।

दो.- निज पैतालिस बरस की, उमरि जाति परमान।
किया कलेवा ग्रन्थ यह, रामनाथ परधान।।

इति श्रीरामकलेवा सम्पूर्णम्

# कविता

नील मणि माल में न तरुनि तमाल में,
न नन्दजू के लाल में न तीसी के सुमन में।
न जमुना के जल में न देखी जम्बू फल में,
न दूर्वा के दल में न नीलकंज वन में।।
ऐसी श्यामताई की न श्यामता न अन्य कहीं,
सावन के सांझ समय देखि नहिं घन में।
राम के विवाह समय राम छवि छांह परी,
जैसी श्यामताई छाई जानकी बदन में। ।।१।।
श्रीजनकजू की बेटी छवि अङ्गन लपेटी,
नहिं जात है समेटी सुख धाम पीय राम सों।
राम सौंह कहति हौं न पक्ष कछू गहति हों,
सीय निकट रहति हौं न बात यह जाल सों।।
जाल सों ने बात यह साची प्रमोद मंजु,
लिपटे नित रहत पीय सीय अङ्कमाल सों।
माल सों बिलोकि बलिहारी सब बाल जाहिं,
कनक बेलि उरझी जनु सुभग वर तमाल सों ।।२।।
प्यारीजू कमल तामें प्रीतम सुगंध लसैं,
प्रीतम यदि कमल प्यारी सरस रस भीना है।
प्यारीजू नीर तामें माधुरी सु प्रीतम है,
प्रीतम यदि नीर प्यारी शीतल सुख दीना है।।

प्यारी जू क्षीर तामें स्वाद रघुवीर लखो,
प्रीतम यदि क्षीर प्यारी माखन नवीना है।
मोद मंजु प्यारी छवि प्रीतम शृंगारर सीय,
सोने की अंगूठी राम नीलमणि नगीना हे ।।३।।
सहज सजीले लाल लाज सों लजीले गोल,
यश सों यशीले और सनेह सरसीले हैं।
नोकान नुकीले चञ्चलाई चटकीले चित्त,
चुभत चुभीले और शील सों भुरीले हैं।।
जगत जगीले जोति दवत दबीले दुःख,
दारिद दरीले और अञ्जन अञ्जीले हैं।
गावत गोपाल गुण गुणद गुणीले नयन,
सीय महारानी के गरुर गरवीले हैं ।।४।।
दामिनी सी गोरी अभिरामिनी करोरि रति,
स्वामिनी हैं मोरी गति गामिनी गजेश की।
कंचुकी कसोरी नील बसन लसो री अंग,
भूषण अथोरी संग सुषमा सुदेश की।।
आनन अँजोरी रही फैलि चहुँ ओरी,
रस राममणि खोरी निशा नाशनी अशेश की।
प्रीति रस बोरी हँसि हेरि दृग कोरी,
करैं राम चित चोरी श्रीकिशोरी मिथिलेश की ।।५।।
कल्पतरु सुमन सुवेर देव देवदारे,
मुदित निहारे मुख दम्पत्ति पुनीता को।

विविध विलास में हुलास को विकास है,
चन्द ते ज्यों प्रबल प्रकाश भास भीता को।।
त्योंहीं देख मंजुल महान मुख मैथिली को,
सकल बिहारी कहैं मन की प्रतीता को।
राम सम शोभा सात लोक में सुनी ना,
पर रामहुँ सों सौगुन अनूप रूप सीता को।।६।।
शोभा अवली के वर बंक बरुनी के,
कंज काम रस सीके राम सुमन अली के हैं।
ऐसे न मृगी के न सची के नहिं भारती के,
सती विष्णु तीके न रतीके निर्बिलीके हैं।।
शौम्य कारुनीके भरे शील सु अमीके,
सम पोसक शशी के भक्त कैरव कली के हैं।
यन्त्र केबसी के बस कारक सु पीके,
रसराम स्वामिनी के नयन नीके मैथिली के हैं।।७।।
जैसी सुकुमारी सुठि सोहनी हमारी सिय,
तैसी मंजु मोहनी सुमूरति सुजान की।
श्याम गौर अंगन बिलोकि 'रसरंगमणि',
रंग की बखानि घटी दामिनी घटान की।।
भव वो भवानी विधि बानी चक्रपाणी रमा,
रति काम छीटे हैं, इनकी छटान की।
जानकी बनी के योग राघव बना ही बने,
राघव बने के योग बनी बनी जानकी।।८।।

नख में नख छत्र मुख मण्डल में चन्द्र सूर्य,
दुति दसनन में सुदामिनी छटान की।
नयन में त्रिवेनी सयन में सब सिद्धि श्रेनी,
भाव में समस्या नव रस कवितान की।।
केश में कुटिलता कुलीनता कटाक्ष में हैं,
कान में प्रवीनता अधीनता कथान की।
विन्दु कवि ज्ञान की पुमान की है बात यह,
जानकी के अंगन में शोभा है जहान की ।।६।।
सची शिर ढ़ौरें चँवर उर्बशी उड़ावैं भ्रमर,
सावित्री सेवें चरण महिषी महेश की।
बरुण खगराज धनराज उड़राज कन्या,
सेवैं गन्धर्वी सुकुमारी सब शेष की।।
नवला नरेशन की दमकैं नभ दामिनि ज्यौं,
आस पास सौज लिये ठाढ़ी देश देश की।
ललौहीं तिहुँ लोकन की तिनमें किशोरसूर,
अद्भुत किशोरी राजैं बेटी मिथिलेश की ।।१०।।
केवरा कराव में न केतकी सु ताब में,
न सुमन गुला में न आमहू अमन्द में।
पारिजात अंग में न माधवी अवंग में,
न मृगमद संग में न वैद्यनाथ चन्द में।।
जूही में न एलिन में न चम्पा वो चमेलिन में,
न सेवती नवेलिन में न मालहू पसन्द में।

इतर सुगन्ध में न नील अरविन्द में न,
जैसी सुगन्ध श्रीयुगल मुखचन्द में ।।११।।
देखि बनरी की छबि रति सकुचानी हिय,
हेरि बनरा को ज्यों मनोज होत झाँवरो।
सिय रघुचन्द की छटा निहारी व्याह समय,
रसिक बिहारी सब लोग भयो बावरो।।
चुनरी ग्रथित पट पीत मणि मौर माथे,
लखि जन भाखौं मिथिलेश पुन्य रावरो।
नवल किशोरी गोरी दुलहिन बनी हैं जैसी,
तैसो नव दूलह किशोर वर साँवरो ।।१२।।
छवि की निकाई कहीं दूजो ना लखाई,
कि जैसी सुघराई यह कंज नैन वारे में।
सुन्दर श्यामताई है लजाई है कोटि काम,
शोभा सवाई सब विधि के सवारे में।।
मृदु मुसुकाई मन मोहत नर नारिन कों,
अङ्ग अङ्ग उपमा समाई सिय प्यारे में।
ऐसी मन भाई जो पाइ जाऊँ कौनो भाँति,
राखि लेतों बाँधि इन्हें पलक पिटारे में ।।१३।।
पहने पग नूपुर उर तोड़ा कड़ा संग,
तापै पिताम्बर की कटि में छवि रोपी है।
जामा औ दुपट्टा गोप गुंजमाल गले,
कुण्डल कपोलन पै उपमा सब लोपी है।।

दियै भाल उर्ध्वपुण्ड खौर युत नासामणि,
दसन मन्द हँसन नय सुदामिनि छवि छोपी है।
जुल्फैं घुंघुरारी श्रीवैदेहीवल्लभजू की,
तापै रंगीली एक जड़ीदार टोपी है ।।१४।।
जब से बिलोकी मनमोहनी तिहारी छवि,
तब से जिया की गति एहि विधि ठगी रहे।
घर ना सोहाय वरु वर ना सोहाय,
तरुतर ना सोहाय चाय चहुँधा चँगी रहे।।
देर कबि कहत सु वेर वेर हेर फेर,
जाऊँ मिलि आऊँ यही भावना जगी रहे।
कासे बताऊँ तोसे कैसे मिल पाऊँ प्यारे,
दारी ननदिया दायें बायें लगी रहे ।।१५।।
पेखि के पटूका औ चुनरी की सुभग छटा,
थाकि रह्यो लोचन करत ना कछु काम है।
वेदन को अम्बर पटम्बर रंगीलो वन्यो,
ईश केन कठ के कसीदा अभिराम है।।
प्रश्न औ मुण्डक माण्डूक्य के सितारे जड़्यो,
ऐतरेय तैतुर के सलमा ललाम है।
छन्द के अरण्य में दुचन्द के प्रकाश मानो,
सुन्दर प्रिया प्रीतम की शोभा सुखधाम है ।।१६।।
राम के शरीर है जो नील मेघ के समान,
जनकलली की प्रभा शुद्ध बिजली सी है।

राम अंग को है रंग जमुन तरंग सम,
तामें जानकी हमारी प्रेम मछली सी है।।
बिन्दु कवि शंकर जटा की भाँति राम रूप,
सीय सुधराई सर सरिता छली सी है।
उपमा मिली है भली राम हैं भ्रमर श्याम,
मैथिली अली री स्वर्ण पंकज कली सी है ।।१७।।

अवध नगर आय आजु अवलोक्यों आली,
अब लों ना विलोक्यो ऐसो अवनि अभूत री।
मति हर लीनी मैं सनेह रीत दीनी और,
प्रेम प्रीति लीनी यहि कीनी करतूत री।।
कहत विहारी लख्यो जा छिन छवीलो छैल,
दृगन समानो भई विकल बहूत री।
विरह अकूत री परो ना कुछ कूत री,
सुकौशिला के पूत री भयो री नैन पूत री ।।१८।।

शीश पर कीट भासमान शोभितमान,
दीपति प्रकाशमान चन्द्रिका सी चन्द की।
कुण्डल जे झीन वह मीनन को मान हरैं,
मन्द मुसुकान पै मिठाई कलाकन्द की।।
साँवरी सुरति हठि बाबरी करत मोहि,
रहति न गति मति सुरति सुछन्द की।
तीन लोक झाँकी ऐसी झाँकी हम झाँकी नाहिं,
जैसी आज झाँकी है युगल मुखचन्द की ।।१९।।

२२३

कोटि मार्तण्ड मणि मण्डित मुकुट शीश,
चन्द्रिका चमक चकाचौंधी चहुँओर की।
शिरपेंच पेंची कल कलँगी कुलिस कन,
वन्दनी विचित्र चित्र असल अँजोर की।।
सतगन नयन पर वसन मुकेश राजै,
एक सी प्रकाश दुति दोनों चितचोर की।
तीन लोक झाँकी ऐसी झाँकी हम झाँकी नाहिं,
जैसी झाँकी झाँकी आज युगल किशोर की ।।२०।।
गौर रंग शोभा निरखि चन्द्रमा की भान हुई,
नील रंग साड़ी जस सोहत मन भावन के।
साँवला की श्यामता बढ़ावत रंग दूनी जैसे,
बदली घनघोर पुनि भादव के मासन के।।
दामिनि सी दमकत है ललीजू की गौर वर्ण,
लागत अवधेशजू ज्यों पूर्णिमा हैं सावन के।
विहँसत जब युगल रूप परस्पर गलबाहीं दै,
तिरछी तकान गला काटत हैं लाखन के ।।२१।।
परसि पदारविन्द पाप नख ज्योति रम्यो,
नूपुर में जाय पुनि एँड़िन में अड़ि गो।
भ्रमि कटि मण्डल अखण्ड उर शीश देश,
दोरदण्ड होय के पुनि ग्रीवा जाय गरि गो।।
निकसो तहाँ से चढ़ि चिबुक अधर नाशा,
अमल कपोल नयन भृकुटी निकरि गो।
रघुराज रामलाल भाल होय फिरन चाहे,
तो मेरो मन जुलुफ जंजीरन जकरि गो ।।२२।।

मरकत ते प्यारी मेघ आभा सी चमकि रही,
अलकें निहारि राम पलकें निवारे को।
पन्नग कुमारी किधौं उमही उमङ्गि राघो,
पेखत जहर चढ़े व्याकुल उतारे को।।
योगिन को चित्त चारु बसि गो रिसक है कै,
दौड़त हैं नेक उतै धीरज सम्हारे को।
जुलुफ जंजीरन में फँसिगो हमारो मन,
वार वार घूमि घूमि कसिगो निकारे को ।।२३।।
कज्जल ते कारे कच किंचित कुटिल प्यारे,
भारे छवि ओजन ते सुषमा लघारे हैं।
मरकत मणि तारे पर शोभा के दुलारे प्यारे,
नेह सों सँवारे राघो काकपक्ष बारे हैं।।
चिक्कन चमकदार बासित सुगन्ध सार,
राम शिर बारे अति सुघर सुधारे हैं।
अलक की लट बीच लटकत योगीन मन,
जुलुफ जंजीरन में जग बाँधि डारे हैं ।।२४।।
हीरा की झलक जैसी जुगनू की दमक जैसी,
चपला की चमक जैसी मोती झलकान है।
सुधा को सीर जैसे नाविक को तीर जैसे,
जादू को पीर जैसे करता पयान है।।
शोभा को मूल जैसे फुलझरी को फूल जैसे,
तेज को त्रिशूल जैसे राघव धरी शान है।

पुहुप विकसान जैसे जोति शशि भान जैसे,
कंचन की खान जैसे तेरी मुसुकान हैं ।।२५।।
आज तक देखी नहिं जगत में सुहायवान,
शीलवान जैसो यह सांवरो सलोना है।
एक बार बिहँसि कै बिलोकत हैं जाकी ओर,
भूलि जात ताहि खान पान निशि सोना है।।
लाज कुलकानि कर्म धर्म सब छूटि जात,
मिथिला निवासिन को काह अब होना है।
साँवरो के आँखिन में क्या भरी सुजान वीर,
जादू है कि मन्त्र है कि मूठ है कि टोना है।।२६।।
तकि के तिरीछे नयन बान सम बेधि सैन,
देत है परम चैन भृकुटी नचाय के।
सुखमा निकाय देखो काम बिक जाय ऐसो,
रूप दरसाय कीन्हों विवस बनाय के।।
रघुराज आलिन समाज ते परानी लाज,
देखो रूप राज प्यारी पलक बिहाय के।
नैन कजरारे मुख मोरि के निहारे,
सीय अंश भुजधारे मनमोहन मुसुकाय के ।।२७।।
तेरे नैन कलि में कल्पतरु पैदा भये,
ताके बीच मेरे नैन चाहत अकोर है।
तेरे नैन पावस अमावस की अँधेरी रैन,
ताके बीच मेरे नैन घटा घनघोर है।।

तेरे नयन बाजिवे को मधुर मृदंग भये,
ताके बीच मेरे नयन नाचिवे को मोर हैं।
तेरे नयन मेरे नयन मेरे नयन तेरे नयन,
मेरे नयन चोरिवे को तेरे नयन चोर हैं ।।२८।।
मार डाला यार तुमने जुल्फ लटका के प्यारे,
मन्द मुसुकान आन बान यह तेरी है।
घायल जिगर है औ हस्ती मिटी है,
बड़ा बेढब जखम है चोट चितवन करेरी है।।
ठहर सकेंगे क्या प्रेम के पथिक प्रेमी,
भौंहें कमान बान अँखियाँ जो बरेरी हैं।
बचेंगे नहीं ही 'सन्त' रुख से रिहाई पै,
चरण में लगालो जान जाने में न देरी है ।।२६।।
चञ्चल चखन चित चोरत चलाके चोखे,
चुभत अनी सी करि अंजन भरोरे में।
कंजहूँ लजत नाहिं नेकहूँ तुलत नाहिं,
कारे मतवारे से फिरे हैं लाल डोरे में।।
महावीर मोहन के मन के हरन वारे,
खंजनहुँ हारे करि यतन करोरे में।
चपल चलावै चहुँओर तिरछौहें मानो,
खेलैं युग मीन कलधौंत के कटोरे में ।।३०।।
ताकत ही तेज ना रहैंगे तेज धारिन माँहि,
मण्डल मयंक मन्द पीले पड़ जायेंगे।

मीन बिन मारे मरि तड़ागन माँहि,
डूबि डूबि शंकर सरोज सरि जायेंगे।।
खायेंगे कराल काल केहरी कुरंगन को,
सारे खंजरीटन के पंख झरि जायेंगे।
तेरी अँखियान ते लड़ैंगे यहाँ और कौन,
केवल अरीले दृग लली के अड़ि जायेंगे ।।३१।।
एरी मेरी आली जरा नेक सुनौ कान दै,
मानि उपदेश निज प्रेमिन सों कहना।
पाय तरुणाई कदराई ना जनावे कभू,
केहरी कराल को शृंगाल जानि रहना।
छूरी औ कटारी भाला बरछी तमंचा तीर,
तेजा अरु नेजा के असंख्य घाव सह ना।
कालहू जो आवै उसे बालहू से तुच्छ जानो,
पै कोरदार नयन से करोर कोस रहना ।।३२।।
रहना करोर कोस करना न याद आली
आवै आवेश तो बेहोश नहिं रहना।
रहना वाही के पास जाने जो पराई पीर,
वाही के संग रहै और की नहिं चहना।।
औरउ की आस है तो आशिकी की आग जरै
छन छन जीना छन छन मरना।
मरना मंजूर पै टरना न नेक आली,
पै कोरदार नयन से करोर कोस रहना ।।३३।।

अजब रसीले समशीले हैं सुशीले कञ्ज,
खंजन हँसीले मीन मंजुल मरोर के।
सुजन अशीले उर अन्तर वशीले प्रेम,
मादक नशीले हैं यशीले चित्त चोर के।।
कविन के वैन तैन उपमा बनैन दैन,
बैजनाथ नैन चैन दैन दया कोर के।
और हैं न नैन लोक हेरे निज नैन जैसे,
हेरे हम नैन नैन कौशल किशोर के ।।३४।।
जाकी ओर एक बार चितवै बिहारीलाल,
ताकी सुधि ना रही ठठोली और बोली की।
चलै की न फिरै की न गिरै चोट लगै की,
न भूषण की न लहँगा की न सारी की न चोली की।।
देह की न गेह की न पति सुत नेह की,
न बेंदुल की न मिस्सी की न सेंदुर की न रोली की।
सखियाँ अचेत है जात 'नागराजराल',
मारे नैन वान जैसे चोट लगै गोली की ।।३५।।
गङ्ग औ यमुन जौ लौं सूर्य और चन्द्र जौ लौं,
जौ लौं वसुन्धरा पै अम्बर यों तनो रहै।
शेष शिर भार जौ लौं नाम निराधार जौ लौं,
जगत पसार जौ लौं वारि सों खरो रहैं।।
विविध सुषमालय मध्य विश्व में सुराज जौ लौं,
तरणि को किरण जौ लौं विरोचन बनो रहै।
तौ लौं हे ईश्वर जगदीश्वर है विनय यही,

जनककिशोरी के माँग में सिन्दूर यों सनो रहै ।।३६।।
जौ लौं वेद वानी बिधि बदन विराजमान,
जौं लौं ईश शीश चन्द्र चन्द्रिका तनी रहे।
जौ लौं रतनाकर धराधर सहित धरा,
भार धर धीर सों सुधीर है फनी रहे।।
जौं लौं नभ मण्डल में रवि शशि विराजे चन्द्र,
जौं लौं सीताराम की सुकीरति घनी रहे।
जौं लौं गङ्गधार के प्रचार पुहुमी के बीच,
तौं लौं मनमोहन की ए मोहिनी बनी रहे ।।३७।।

## कुण्डलिया

अँखियाँ छबि अँखियाँ लखी बरसत रस जनु मेह।
सजन सजाती समुझिकै सरस्यो सरस सनेह।।
सरस्यो सरस सनेह कानि कुल एक न रखियाँ।
बरबस परबस भई शहद की सनी सी मखियाँ।।
समुझावत शुभ सीख सयानी संग की सखियाँ।
नहिं मानत मधुरी बात एक मदमाती अँखियाँ।।१।।
नैना लागैं जाहि उर घाव करैं भरिपूर।
ऊपर प्रगट न देखिये भीतर चकनाचूर।।
भीतर चकनाचूर हाय उठती हिय हूकैं।
मदन मरोरत जोर विषम बिरहा की लूकैं।।
दहत रहत दिन रैन परत नाहीं चित चैना।
कढ़त नहीं मुख बैन लगै जब 'मधुरी' नैना ।।२।।

नयना सर विष रस भरे चुभत हीय बेपीर।
कसक करेजे करत हैं धरत नहीं मन धीर।।
धरत नहीं मन धीर शरीर सु थर-थर कांपै।
लहर चढ़त अति जोर जहर अंग-अंग प्रति व्यापै।।
'मधुरी' कल नहिं परत जाउँ कहँ सतवत मयना।
करकत हैं दिन रैन जुलुम जालिम सर नयना ।।३।।
नैन मैन मद रस भरे सैन पैन असि धार।
लगत तनक जाके हिय करत सु घोर चिकार।।
करत सु घोर चिकार घाव नहिं सूझै तन में ।
भूलि जात घर बार और नहिं भावै मन में।।
लटपट चलत सु 'माधुरी' अटपट बदत सु बैन।
निठुर गजब जुलमी जबर अजब शिकारी नैन ।।४।।

## सवैया

सुखकन्द नहीं मिसरी में नहीं नहिं दाखन चाखन माखन में।
सुख नाहीं मिले उर राखन में हँसिके खिसके कछु भाखन में।।
सुख जेते सुशील प्रवीण भने हम ढूंढें बहू विधि लाखन में।
सुख हैं सुख तो सुख एकहिं हैं इन प्यारे और प्यारी की आँखन में।।१।।
जाको लगै सोइ जाने बिथा पर पीर में कोउ उपहास करे ना।
प्रीतम जो चुभि जात हैं चित्त तो कोटि उपाय करे निकसे ना।।
नेक सी कांकरि आँखि परे सो पीर के मारे धीर धरै ना।
कैसे परै कल एरी भटू जिन आँखि में आँखि परे निकसै ना ।।२।।
भूलि चितौनी लड़ै जो कभूँ वर व्याकुलता को मिले विनु माँगे।
वेवश होय मन आय फँसे न चलै बस निर्गुन के गुन आगे।।
अंजन देखि निरंजन को जियरा अकुलाय उठे अनुरागे।

२३१
गोली की घाव लगे पै लगे इन आँखिन सों सखि आँखि न लागे।।३।।
आँख लगे घर बार छूटे अरु भ्रात पिता सुनि के मन मांखे।
आँख लगे वैराग्य चढ़े दुख दूनो बढ़े दुख ही दुःख व्यापे।।
तीर चले तलवार चले बरछी जो चले धरणी धरि साके।
गोली के घाव लगे पै लगे पर काहु की आँखि सो आँखि न लागे।।४।।
रसि जाते किते रसिया रसमें बसि जाते किते घर जारन के।
फँसि जाते पथी लखि लोनी छटा गलियान बिहारी बजारन के।।
परि जाते मजारन में कितने मुसुकानि सों मारे नजारन के।
बनि जाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते हजारन के।।५।।
तन कोमलता वर लोनी छटा छबि श्यामलता चित चोरन के।
बलिहारी तिहारी बड़ी अँखियाँ तिरछी तकिया दृग कोरन के।।
कवि बाल छवी मुख माधुरता अंग तोरन भौंह मरोरन के।
बनि जाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते करोरन के ।।६।।
तन श्यामलता की कहाँ उपमा कवि कोविद कौन बखानन के।
सुर शारद शेष महेशहुँ जाहि न शक्ति रखी है गावन के।।
अवधेश के रूप की मधुरता लखि भान हुई घटा सावन के।
बनि जाते लली तुम रामलला तो गला कटि जाते ये लाखन के ।।७।।
ताकी तमाम महानन में उपमा न कहूँ छबि की सम जाकी।
जाकी सदा पद पङ्कज की रज की महिमा कहि वेदन थाकी।।
थाकी गती सहसाननकी कमला रति दामिनि की दुति झाँकी।
झाँकी अली अँखिया हमरी लखिके मुसुकान विदेह सुता की।।८।।
सुनिये श्रीमिथिलेशनन्दिनी विनती एक मोर चित्त धरके।
कबहुँक अवसर पाइ दसा मम कहियो जाय निकट रघुवर से।।
गोपी ईश अति आतुर होय आयो द्वार त्रसित कलि डर से।

दीजै शरण जानि शरणागत ये हैं वासी मोर नैहर के ।।६।।
सखि श्याम सजन रघुनन्दन को क्या पाग सुभग शिर नीको है।
श्रुति कुण्डल लोल कपोलन पै अलकावलि ग्राहक जी को है।।
मुख मण्डल की दुति देखि लजी प्रतिभा बहु सूर्य शशी को है।
रसराज अनूपम अङ्ग सबै उपमा जगकी सब फीको है ।।१०।।
शिरमौर धरे मणियों से जड़ित श्रुति कुण्डल कंचन की लहरें।
घनश्याम छटा पर पीत पटा दुति विद्युत की चहुँधा बगरें।।
तुलसी अरु सूक्तन को गलमाल मुखलाल अधर अघ दैत्य हरें।
अस दूलह रूप किये मनमोहन मोहन के मनमां बिहरें ।।११।।
तुम चाहो न चाहो पियारें हमें दिन रैन सदा जियरू से घने रहो।
बोलो न बोलो हँसो न हँसो गर लागो न लागो जू रोस जने रहो।।
जो जिय भावे करो रसिकेश भले सुख साज में सार सने रहो।
नैनन से लखि लीजै लला जुग कोटिन लौं तुम नीके बने रहो ।।१२।।
माधुरी सी मुसुकानि अली वर जोहनि माँहि करैं बरजोरी।
बरजोरी न मानत ए मन री बरजोरी सुधाई चलै तिहि ओरी।
आली अरी बरजोरी सिया बरजोहनि माँहि बसी कर घोरी।
हे बिधना सुन मोरी विनय चिरंजीव रहैं दोऊ सुन्दर जोरी ।।१३।।
श्याम शरीर सुहावन ए मन भावन विश्वछवि छवि छोरी।
तैसी अली ए बिदेह लली मन लेति बिदेह तिया वरजोरी।।
हौ सुकुमार कुमार कुमारि पै काहु की आई परै न ठगोरी।
शंकर होय सहाय सदा चिरंजीव रहै दोऊ सुन्दर जोरी ।।१४।
नित्य निकुँज विहार करौ रति रंग रंगी रहो लाड़िली गोरी।
प्रीतम प्राण सुजान के संग दिये गलबांह बसो हिय मोरी।।
श्रीमती चन्द्रकलादि अली गुण आगरि रूप लखै तृण तोरी।
ईश मनाय अशीशैं सबै कि बनी रहै नित्य किशोर किशोरी ।।१५।

*******

श्री सीताराम जी

पुस्तक मिलने का पता :

## महन्थ श्री रसिक शिरोमणि मन्दिर

चिरान्द छपरा, जिला सारण बिहार

❄

## श्री नन्दकुमार झा

श्रीमैथिली चन्दन कनक भवन, अयोध्या

❄

## श्री शिवगोविन्द पुस्तकालय

शृंगारहाट, कोतवाली के सामने, अयोध्या (उ.प्र.)

❄

## श्री वैदेही पुस्तक भण्डार

श्री तुलसी उद्यान के बगल, नयाघाट, अयोध्या (उ.प्र.)

संशोधित मूल्य : 30 रुपये